आख़िरी संदेश

हुजूर महाराज जी का सार प्रेमियों के नाम अंतिम उपदेश

तर्ज़ – तेरी बंदगी है .....

मजलिस तुम्हारी से हम जा रहे है, हमें भूल जाना, हमें भूल जाना।
सर्द आहे भरके ख़ुद भी न रोना, और न रुलाना, और न रुलाना।। टेक।।

मजलिस तुम्हारी यूं सजती रहेगी।
गुरु नाम की धुन बजती रहेगी।।
बड़े प्रेम से सत्गुरु के गीत गाना, हमें भूल .....

सबके लिए ये हमारी दुआ है।
लाखों ही रोगों की ये इक दवा है।।
बड़े प्यार से ये दवा खाते जाना, हमें भूल .....

मीठे वचन जो सबको प्रिय हैं।
वहीं बोलने को प्रभु ने दिये हैं।।
ज़बां टेढ़ी करना न दिल को दुखाना, हमें भूल .....

उपदेश सुनकर न उदास होना।
जो भी सुने उनके "दासनदास" होना।।
गुरु सेवकों का ही दास कहलाना, हमें भूल .....